Shodhpith
International Multidisciplinary Research Journal
(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)
(Multidisciplinary, Bimonthly, Multilanguage)
Volume: 1 Issue: 4 July-August 2025

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में बिहार की महिलाओं का योगदान– एक अध्ययन

डॉ0 निमिषा रानी सिंह
पी–एच. डी., इतिहास विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

सारांशः

महिलाएं देश में आधी आबादी का नेतृत्व करती हैं। महिलाओं के योगदान को विस्मृत कर भारतीय इतिहास को लिखा जाना संभव नहीं है। प्रागैतिहासिक काल से महिलाएं पुरुषों का सहयोग करती आ रही हैं। प्रारम्भ में महिलाओं को अपनी महत्ता का अहसास नहीं था। किन्तु देश में जब सामाजिक पुनर्जागरण से प्रगतिशील विचारधारा जोड़ पकड़ने लगी तब महिलाओं ने अपनी महत्ता को पहचानना शुरू किया। कई लेखकों ने भी अपने लेखन के माध्यम से महिलाओं को यह एहसास दिलाया कि वह साहस तथा शौर्य में पुरुषों के समान है। तथा प्रत्येक वह कार्य करने में सक्षम है, जिसे पुरुष करते आ रहे हैं। इस सम्बंध में सुभद्रा कुमारी चौहान का कथन प्रासंगिक है– "खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।" विभिन्न प्रकार की गुलामियों से मुक्ति हेतु सदियों से प्रयास होते रहे हैं। जिनमें महिलाओं ने भी खुल कर पुरुषों का साथ दिया। औपनिवेशिक व्यवस्था के विरोध में भारत में जब स्वाधीनता संग्राम प्रारम्भ हुआ तो उसमें बिहार की महिलाओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महिलाओं की महत्ता के सन्दर्भ में लार्मिटन का कथन है कि "सम्पूर्ण महान कार्य के प्रारम्भ में किसी न किसी स्त्री का हाथ रहा है।" भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में मातृत्व शक्ति की भूमिका को कभी नहीं भुलाया जा सकता। जिन्होंने इस भव्य भारत मन्दिर के निर्माण में नींव के पत्थर का कार्य किया।

कुँजी– पुनर्जागरण, औपनिवेशिक, स्वाधीनता, मातृत्व शक्ति।

प्रस्तावना–

बिहार में आंदोलन का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य : भारत छोड़ो आंदोलन 1942 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाया गया, और इसका प्रभाव पूरे भारत में महसूस किया गया। बिहार, स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण केंद्रों में से एक रहा है। यहाँ आंदोलन की शुरुआत शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में हुई। शहरी क्षेत्रों जैसे पटना, गया, भागलपुर और मथुरा में आंदोलन ने विशेष रूप से महिलाओं की सक्रिय भागीदारी देखी। इन शहरों में महिलाएँ न केवल सड़कों पर उतरकर ब्रिटिश कार्यालयों का घेराव करती थीं, बल्कि हड़तालों, धरनों और विरोध प्रदर्शनों के माध्यम से प्रशासनिक कार्यों को बाधित करने में भी सक्रिय थीं। उन्होंने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ जन–जागरूकता अभियान चलाया, लोगों को सत्याग्रह और नागरिक अवज्ञा की आवश्यकता के प्रति जागरूक किया और युवा पीढ़ी को आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी और भी चुनौतीपूर्ण थी। वहाँ के सामाजिक और पारंपरिक बंधनों के कारण महिलाओं की सार्वजनिक सक्रियता सीमित थी, फिर भी उन्होंने गाँव–गाँव जाकर आंदोलन की सूचनाओं का प्रसार किया। ग्रामीण महिलाओं ने सत्याग्रह में भाग लिया, विरोध

प्रदर्शन आयोजित किए और स्थानीय नेताओं के साथ मिलकर आंदोलन को संगठित किया। कई गाँवों में महिलाओं ने अपने पुरुष साथियों के साथ मिलकर प्रदर्शन किया, किसानों और मजदूरों को आंदोलन में शामिल किया, और स्थानीय ब्रिटिश नीतियों के विरोध में साहसिक कदम उठाए।

बिहार की प्रमुख महिला क्रांतिकारिणियाँ और उनका योगदान–

भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की महिलाओं ने साहस, नेतृत्व और त्याग की अद्वितीय मिसाल प्रस्तुत की। उन्होंने न केवल पुरुष नेताओं के नेतृत्व का समर्थन किया, बल्कि आंदोलन के संगठन, रणनीति और प्रचार में भी सक्रिय भाग लिया।

बिहार की प्रमुख महिला क्रांतिकारिणियाँ निम्नलिखित हैं–

संतोषी देवी: संतोषी देवी बिहार की उन महिला क्रांतिकारिणियों में से एक थीं, जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान पटना को अपने नेतृत्व और सक्रिय भागीदारी का केंद्र बनाया। वे आंदोलन की अग्रणी थीं और उनके साहसिक कदमों ने बिहार के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका को विशेष महत्व दिया। संतोषी देवी ने कई ब्रिटिश कार्यालयों और सरकारी भवनों का घेराव किया, जहाँ उन्होंने शांतिपूर्ण लेकिन दृढ़ प्रतिरोध के माध्यम से ब्रिटिश अधिकारियों को संदेश दिया कि जनता अब उनके शासन को स्वीकार नहीं करेगी। उन्होंने महिलाओं को सत्याग्रह, विरोध प्रदर्शन और हड़तालों में सक्रिय रूप से शामिल किया। उनका उद्देश्य केवल विरोध करना नहीं था, बल्कि महिलाओं में राजनीतिक चेतना और नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाना भी था। संतोषी देवी ने महिलाओं को संगठित करना सिखाया। उनके नेतृत्व में महिलाएँ न केवल आंदोलन में शामिल हुई, बल्कि उन्होंने स्थानीय समुदाय में भी आंदोलन की भावना को फैलाया। वे घरों, चाय–फोटों और पंचायतों में महिलाओं को जोड़तीं, उन्हें आंदोलन के उद्देश्य और रणनीति के बारे में समझातीं। इस प्रकार उन्होंने महिलाओं को पा. रंपरिक सामाजिक सीमाओं से बाहर निकलकर राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। उनकी सक्रिय भागीदारी का प्रभाव केवल महिलाओं तक सीमित नहीं रहा। स्थानीय जनता, विशेष रूप से युवा और ग्रामीण महिलाएँ, उनके नेतृत्व से प्रभावित हुईं और आंदोलन में शामिल हुईं। उनकी रणनीति और साहस ने बिहार में भारत छोड़ो आंदोलन को मजबूती दी और स्थानीय विरोध प्रदर्शनों को संगठित रूप दिया। संतोषी देवी का योगदान इस दृष्टि से ऐतिहासिक महत्व रखता है कि उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम का सक्रिय हिस्सा बनाने के साथ–साथ यह भी दिखाया कि आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के संघर्ष के समान महत्वपूर्ण और निर्णायक हो सकती है।" उनकी निडरता, नेतृत्व क्षमता और संगठनात्मक कौशल आज भी स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में प्रेरणास्रोत हैं।

रोहिणी देवी: रोहिणी देवी बिहार की उन प्रमुख महिला क्रांतिकारिणियों में से एक थीं, जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अपने साहस, धैर्य और नेतृत्व क्षमता के लिए विशेष पहचान बनाई। वे मुख्य रूप से जेल संघर्ष और सार्वजनिक विरोध प्रदर्शनों के लिए जानी जाती हैं। रोहिणी देवी का योगदान इस बात का प्रमाण है कि महिलाओं की भागीदारी स्वतंत्रता संग्राम में केवल समर्थन या प्रतीकात्मक गतिविधियों तक सीमित नहीं थी, बल्कि वे सशक्त नेतृत्व और निर्णायक संघर्ष का भी हिस्सा थीं।" आंदोलन के दौरान रोहिणी देवी ने कई बार गिरफ्तारी और जेल यातनाओं का सामना किया। जेल में रहते हुए भी उन्होंने अपने साहस और आत्मविश्वास से अन्य कैदियों को प्रेरित किया। उनका अनुशासन, धैर्य और संघर्षशीलता अन्य महिलाओं और युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बनी। जेल में उन्होंने सत्याग्रह और अहिंसात्मक प्रतिरोध की भावना बनाए रखी, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि महिलाओं का योगदान केवल प्रदर्शन तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें बलिदान, त्याग और व्यक्तिगत कठिनाइयों का सामना करना भी शामिल था ।रोहिणी देवी ने जेल से बाहर आने के बाद भी आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई ।12 उन्होंने स्थानीय महिलाओं को संगठित किया, उन्हें राजनीतिक जागरूकता दी और सत्याग्रह, हड़तालों तथा विरोध प्रदर्शनों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उनका यह नेतृत्व न केवल महिलाओं को सशक्त बनाने वाला था, बल्कि उन्होंने ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में आंदोलन की रणनीति और संगठन को भी मजबूत किया।

सामाजिक दृष्टि से रोहिणी देवी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था। उनके साहस और संघर्ष ने यह संदेश दिया कि महिलाएँ भी स्वतंत्रता संग्राम में निर्णायक भूमिका निभा सकती हैं, और उनके नेतृत्व से अन्य महिलाओं में भी आंदोलन में भाग लेने की प्रेरणा और आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ। इसके अलावा, रोहिणी देवी ने महिलाओं के

बीच सामाजिक जागरूकता और राजनीतिक चेतना फैलाने का कार्य किया, जिससे बिहार में आंदोलन को व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हुआ। रोहिणी देवी का यह संघर्ष और त्याग यह दर्शाता है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान पुरुषों के योगदान के समान महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक था। उनकी निडरता, साहस, नेतृत्व और बलिदान आज भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी का प्रतीक हैं।

लक्ष्मी देवी: लक्ष्मी देवी बिहार की उन महिला क्रांतिकारिणियों में से एक थीं, जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में आंदोलन का नेतृत्व किया। वे यह दिखाने वाली महिलाओं में शामिल थीं कि स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी केवल शहरों तक सीमित नहीं थी, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएँ भी सक्रिय और निर्णायक भूमिका निभा सकती हैं।" लक्ष्मी देवी ने गाँव–गाँव जाकर महिलाओं को संगठित किया। उन्होंने स्थानीय महिलाओं को सत्याग्रह, विरोध प्रदर्शन और हड़तालों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उनका उद्देश्य केवल विरोध प्रदर्शन करना नहीं था, बल्कि ग्रामीण महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक सक्रियता विकसित करना भी था। उनके प्रयासों से ग्रामीण महिलाओं ने न केवल आंदोलन में भाग लिया, बल्कि अपने परिवार और समुदाय में भी स्वतंत्रता संग्राम की भावना फैलाई।

लक्ष्मी देवी ने जन–जागरूकता अभियान चलाकर स्थानीय जनता को ब्रिटिश नीतियों और अत्याचारों के खिलाफ सजग किया। उन्होंने महिलाओं और युवाओं को आंदोलन के उद्देश्यों और रणनीतियों से परिचित कराया और उन्हें संगठनात्मक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इस तरह उन्होंने ग्रामीण बिहार में आंदोलन की सामाजिक और राजनीतिक नींव मजबूत की। इन प्रमुख महिला क्रांतिकारिणियों संतोषी देवी, रोहिणी देवी और लक्ष्मी देवी के अलावा कई अनाम महिला योद्धाओं ने भी अपने गाँवों और शहरों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने सत्याग्रह में भाग लिया, चुप्पी का विरोध किया, ब्रिटिश नीतियों के खिलाफ प्रतिरोध किया और स्थानीय जनता को आंदोलन में जोड़ने का कार्य किया। ये अनाम नायिकाएँ भले ही इतिहास में कम जानी गई हों, लेकिन उनके साहस, त्याग और नेतृत्व ने बिहार में भारत छोड़ो आंदोलन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लक्ष्मी देवी और अन्य महिलाओं के इस योगदान ने यह स्पष्ट किया कि महिलाएँ स्वतंत्रता संग्राम में निर्णायक शक्ति हो सकती हैं। उनके नेतृत्व, सक्रिय भागीदारी और बलिदान ने न केवल आंदोलन को मजबूती दी, बल्कि बिहार की महिलाओं की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति को भी सशक्त किया।20 यह साबित करता है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान पुरुषों के योगदान के समान ही महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक था।

अन्नपूर्णा देवी– भागलपुर क्षेत्र में योगदान : अन्नपूर्णा देवी भागलपुर क्षेत्र की एक प्रमुख महिला क्रांतिकारिणी थीं, जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में सत्याग्रह, विरोध प्रदर्शन और महिलाओं के संगठन के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने स्थानीय महिलाओं को ब्रिटिश शासन के खिलाफ संगठित किया और उन्हें सामाजिक और राजनीतिक चेतना से लैस किया। अन्नपूर्णा देवी ने गाँव–गाँव जाकर महिलाओं को आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया, उन्हें सत्याग्रह और विरोध प्रदर्शन के संगठनात्मक तरीके सिखाए और आंदोलन की रणनीति में सक्रिय योगदान दिया। उनके नेतृत्व में कई गाँवों में सांकेतिक हड़तालें, रैली और जन–जागरूकता अभियान आयोजित किए गए, जिससे स्थानीय जनता में आंदोलन के प्रति समर्थन और सक्रिय भागीदारी बढ़ी। उनके साहस और समर्पण के कारण कई बार उन्हें ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा गिरफ्तार किया गया।" जेल में रहते हुए उन्होंने आंदोलन की भावना बनाए रखी और अन्य कैदियों को भी प्रेरित किया। अन्नपूर्णा देवी का योगदान इस बात का प्रमाण है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का नेतृत्व, संगठन क्षमता और बलिदान आंदोलन को सफल बनाने में निर्णायक था।

शांति देवी– गाँधीजी ने अपना प्रथम सत्याग्रह दक्षिण अफ्रीका में शुरू किया था। जहाँ उनके आदर्शों से प्रभावित होकर महिलाओं ने सत्याग्रह में उनका साथ दिया। 1915 ई. में जब गांधीजी का भारत आगमन हुआ तो राजकुमार शुक्ल ने गाँधी जी का ध्यान बिहार स्थित चम्पारण के नील किसानों की ओर आकृष्ट कराया। नील किसानों के समर्थन में गांधीजी ने भारत मे अपना पहला सत्याग्रह प्रारम्भ किया। गांधीजी के सत्याग्रह के कारण नील किसानों की समस्या का काफी हद तक अंत हुआ। गांधीजी द्वारा किये गए इस अहिंसक सत्याग्रह के फल. स्वरूप अंग्रेजों द्वारा उनकी कुछ मांगों को मान लिये जाने का बिहार की महिलाओं के साथ सम्पूर्ण जनता में सकारात्मक संदेश पहुँचा और उनका मनोबल बढ़ा। क्योंकि ऐसा प्रथम बार हुआ कि अंग्रेजों ने भारतीयों की बातों को मान लिया था। गांधीजी ने जब गुजरात के बारदौली में सत्याग्रह किया तो महिलाओं का भी समर्थन मिला।

गांधीजी ने भारत में सत्याग्रह आंदोलन के क्रम में मातृ–शक्ति का आह्वान करते हुए उनके नाम से एक खुली चिट्ठी लिखी तथा उनसे विदेशी वस्त्र एवं नशीले पदार्थों का बहिष्कार कर उनसे स्वतंत्रता संग्राम में सहायता देने की अपील की। ताकि विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर स्वदेशी हस्त–निर्मित वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ावा दिया जा सके। अन्य रचनात्मक कार्यों के साथ महिलाएँ अपना बचा समय लगा कर बहुत सहायता कर सकती थीं। गांधीजी ने कहा कि... "विदेशी वस्त्र विक्रेताओं तथा क्रेताओं एवं शराब पीनेवालों एवं बेचनेवालों से उनकी अपील उनका हृदय पिघलाए बिना नहीं रह सकती थीं।" उन्होंने यह भी कहा कि यह असम्भव नहीं कि इस सिलसिले में उन्हें अपमानित किया जाए! किन्तु ऐसा अपमान सहना भी उनके लिए गौरव की बात होगी। किन्तु ऐसी स्थिति आने पर देश की अग्नि परीक्षा जल्दी खत्म होगी।

गांधीजी के अहिंसक आंदोलन को चम्पारण में देख चुकीं बिहार की महिलाओं पर गांधीजी की अपील का सकारात्मक प्रभाव पड़ा। तथा उन्होंने अपील के मद्देनजर पटना में विदेशी वस्त्रों बहिष्कार किया। पटना में विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार की सफलता का श्रेय महिलाओं को दिया जाता है। विंध्यवासनी देवी तथा श्रीमती हसन इमाम के नेतृत्व में अनेक महिलाओं ने पटना में विदेशी वस्त्रों के दुकानों के सामने धरना प्रदर्शन को सफल बनाया। तथा दुकानदारों से विदेशी वस्त्र का व्यापार नहीं करने की अपील की। महिलाओं के क्रांतिकारी रूप को देख कर पटना में पदस्थापित तत्कालीन मजिस्ट्रेट ने महिलाओं से मुकाबला करने हेतु 'महिला पुलिस' नियुक्त करने का सुझाव दिया। यद्यपि यह सुझाव तत्कालीन जिलाधिकारी एवं आयुक्त को व्यवहारिक प्रतीत नहीं हुआ। महिलाओं का अदम्य साहस नमक आंदोलन के दौरान भी देखने को मिला जब शाहाबाद जिले के श्री राम बहादुर बार–एट–ला की पत्नी ने सहसराम थाने के समक्ष नमक, बना कर नमक कानून का उल्लंघन किया। गांधीजी के नेतृत्व तथा अपील का प्रभाव सम्पूर्ण बिहार की महिलाओं पर दिखने लगा था। देशबंधु कोष हेतु जब गांधीजी ने बिहार का भ्रमण किया तो महिलाओं ने अपने आभूषण तक दान में दे दिए। देशबन्धु कोष के कार्य में गांधीजी को जयप्रकाश नारायण की पत्नी प्रभावती देवी का महत्वपूर्ण सहयोग मिला। महिलाओं में जागरण के सन्दर्भ में जनवरी, 1929 मील का पत्थर सिद्ध हुआ। जब पटना में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में बिहार की महिलाओं को देश के विभिन्न भागों से आई महिलाओं से मिलने, उनके विचारों को जानने तथा महिला समाज में व्याप्त सीमाओं को दूर करने के तरीकों पर विचार करने के साथ देश की स्वतंत्रता हेतु सार्थक पहल पर आपसी संवाद किया। बिहार में सम्मेलन की एक शाखा की नींव रखी गई। जिसका एक अधिवेशन 17 दिसम्बर, 1929 को हुआ। जिसमें शारदा एक्ट के समर्थन तथा पर्दा प्रथा एवं दहेज प्रथा जैसी बुराईयों के विरोध में प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

बिहार की अनेक महिलाओं ने इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ी उन्होंने अपने कार्यों से न सिर्फ स्त्री वर्ग को जागृत करने का प्रयास किया बल्कि अपने प्राणों की चिन्ता न कर स्वतन्त्रता आंदोलन में बढ़–चढ़ कर हिस्सा किया। इन साहसी महिलाओं में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की बहन भगवती देवी, उनकी पत्नी राजवंशी देवी, जयप्रकाश नारायण की पत्नी श्रीमती प्रभावती देवी, श्रीमती विन्ध्यवासिनी देवी, श्रीमती हसन इमाम, श्रीमती राम दुलारी सिन्हा, लाल बहादुर शास्त्री की बहन एवं शंभु शरण वर्मा की पत्नी श्रीमती सुन्दरी देवी, श्रीमती सरस्वती देवी, श्रीमती प्रियवंदा देवी तथा श्रीमती भवानी मल्होत्रा आदि नाम प्रमुख हैं।

1857 की क्रान्ति को भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम माना जाता है। जिसमे बिहार के बाबू कुंवर सिंह ने महत्त्पूर्ण भूमिका निभाई थी। बाबू कुंवर सिंह ने जब अंग्रेजों के विरुद्ध सेना का नेतृत्व किया तो इस संग्राम में गुप्त रूप से कई महिलाओं ने कुंवर सिंह की सहायता की। जिनमें आरा क्षेत्र की करमन बाई, धरमन बाई तथा नर्तकी गुलाबी आदि प्रमुख हैं। नर्तकी, गुलाबी कुंवर सिंह को बचाने के प्रयास शहीद हो गयीं। जिसकी स्मृति में कुंवर सिंह ने आरा मे एक मस्जिद का निर्माण करवाया।

गांधीजी महिलाओं की शक्ति को पहचानते थे। इसे वे दक्षिण अफ्रीका में देख भी चुके थे। अतः पहली बार 1917 ई० में प्रथम बार बिहार आगमन पर उन्होंने सभी लोगों से स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ने की अपील की। गांधीजी का मानना था कि स्वराज्य की विजय में देश की स्त्रियों का उतना ही हिस्सा होना चाहिए जितना पुरुषों का। शुद्ध भावना से स्त्रियाँ कार्य कर पहाड़ों को भी हिला दे सकती हैं। तथा आंदोलन के दौरान जब पुरुष जेल जायेंगे तो महिलाएँ उनके कार्यों को सम्पादित कर सकेंगी। साथ ही लोगों को समझाने–बुझाने का कार्य पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं कुशलतापूर्वक कर सकती हैं, क्योंकि उनमें अहिंसा की प्रवृति अधिक है। गांधीजी ने जब आंदोलन

को अहिंसात्मक रूप दिया तो महिलाओं ने इसमें अच्छी भागीदारी निभायी। मातृशक्ति निर्भीकता पूर्वक हर प्रकार के सार्वजनिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेतीं, राष्ट्रीय नेताओं के आगमन पर सभा, सम्मेलनों में उनका साथ देती तथा उनके अपील पर लड़ाई के मैदान में कूद पड़ने के लिए हर समय

निष्कर्ष:

बिहार में स्वतंत्रता संघर्ष का लम्बा इतिहास रहा है। औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध जब भी आवाज बुलंद हुई तो बिहार के लोग अग्रणी पंक्ति में खड़े हुए। किन्तु यह पंक्ति तब और सशक्त हो गई, जब इसमें मातृशक्ति की सक्रिय भूमिका हो गई। बिहार का यह सौभाग्य था कि गांधीजी ने भारत में अपना प्रथम सत्याग्रह बिहार प्रान्त की भूमि पर किया। गांधीजी का यह सत्याग्रह महिलाओं हेतु प्रेरणास्रोत बना। और इस प्रेरणा को और बल मिला जब भारत में गांधीवादी आंदोलन विभिन्न मुद्दों को लेकर आगे बढ़ा। अंग्रेजों का विरोध जैसे– जैसे बढ़ता गया वैसे–वैसे देश की आजादी के लिए महिलाओं का साहस भी बढ़ता गया। फलतः देश को आजाद होने तक महिलाएँ इस मोर्चे पर डटी रही और अंततः 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतन्त्र हुआ जिसमें बिहार के महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

Author's Declaration:

The views and contents expressed in this research article are solely those of the author(s). The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible for any errors, ethical misconduct, copyright infringement, defamation, or any legal consequences arising from the content. All legal and moral responsibilities lie solely with the author(s).

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1. कुमार अमरेन्द्र, स्वाधीनता संग्राम में बिहार की महिलाएं, हिन्दुस्तान, दिनांक 15–08–1997, पृ०–17
2. बिहार की महिलाएं, स. शिवपूजन सहाय, पृ०– 332
3. वर्णवाला, महेश कुमार, भारती डॉ० श्याम मूर्ति, बिहार एक समग्र अध्ययन (2019), कॉसमॉस पब्लिकेशन, दिल्ली
4. दत्त, के० के०, बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास, खण्ड– 3, पृ०–33
5. झा, दिगम्बर (प्र.सं.) 1971, बिहार का खादी आंदोलन और उसका विकास, पृ०–32
6. सलोना श्याम, बिहार समग्र, केबीसी नैनो पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, पृ०–16

Cite this Article-

'डॉ0 निमिषा रानी सिंह,', **'भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में बिहार की महिलाओं का योगदान – एक अध्ययन'**, Shodhpith International Multidisciplinary Research Journal, ISSN: 3049-3331 (Online), Volume:1, Issue:04, July-August 2025.

Journal URL- https://www.shodhpith.com/index.html

Published Date- 13 July 2025

DOI-10.64127/Shodhpith.2025v1i4006